© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 03 , Issue : 11 | October – December 2017

बुंदेलखंडी सहायक क्रिया : संरचनात्मक स्वरूप

योगिता रानी, yogitakharb40@gmail.com

ISSN 2454-308X
9 770024 543081

प्रस्तावना

भारतीय भाषाओं की अपनी एक परंपरा रही है, इस परंपरा में सबसे पुरानी और प्राचीन भाषा संस्कृत मानी जाती है। ''संस्कृत भारती उप महादीप की एक उपभाषा है। इसे देववाणी अथवा सूर भारती भी कहा जाता है। ये विश्व की सबसे प्राचीन भाषाओं में से एक है। भाषाओं के इसी इतिहास में संस्कृत से विकसित हिन्दी भाषा का भी अपना एक स्थान रहा है। हिन्दी भारतीय विश्व की एक प्रमुख भाषा है एवं भारत में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। इसकी विविधता और विश्व आर्थिक मंच पर इसकी महत्वता हमें विश्व की शक्तिशाली भाषाओं में से एक बनाती हैं। भारत में हिन्दी भाषा की विभिन्न बोलियां पाई जाती हैं। जिनमें बुंदेलखंडी एक व्यापक क्षेत्र में बोली जाने वाली पश्चिमी हिन्दी की महत्वपूर्ण बोली है। इसकी महत्वता इस बात से ह कि केवल संस्कृत या हिन्दी पढ़ने वालों को बुंदेलखंडी शब्दों के अर्थ को समझना आसान नहीं होता बुंदेलखंडी अपने आप में हजारों शब्दों को संग्रहित किए हुए है। बुंदेलखंडी के पास ऐसे कई शब्दों के भंडार है जिसे समझना अन्य भाषियों के लिए आसान नहीं होता। बुंदेलखंडी की अपने आप में एक प्राचीन परंपरा भी रही है जिसके अंतर्गत शासकीय पत्र व्यवहार जिसके अंतर्गत बुंदेलखंडी राजाओं के द्वारा शासकीय पत्र व्यवहार, संदेश, बीजक, राजपत्र एवं मैत्री संधियों के अभिलेख प्रचुर मात्रा में मिलते हैं। ऐसा माना जाता है कि औरंगजेब और शिवाजी भी ''बुंदेलखंडी क्षेत्रों के हिन्दी राजाओं से बुंदेलखंडी में ही पत्र व्यवहार करते थे।'' बुदेलखंडी व्याकरणिक दृष्टि से भी बहुत मजबूत और समृद्ध मानी जाती है। बुंदेलखंडी के अपने शब्दकोश, कहानी, उपन्यास, राजाओं कि वीर गाथाएं, क्रांतिकारी इतिहास, लोकोक्ति, मुहावरे, व्याकरण इसके प्रमाण है। स्थान और भाषा सीमाओं Grierson 1968 Vol. IX में उल्लेख है कि बुंदेली मध्यप्रदेश के प्रमुख भाशाओं में से एक है यह पूर्व में उत्तर और उत्तर पश्चिम हिन्दी के निकट से संबंधित कन्नौज और ब्रज बोलियों द्वारा पूर्वी हिन्दी के बघेली से घिरा है।'' ''बुंदेलखंडी से संबंधित बहुत सी निकट बोलिया पाई जाती है। ग्रियर्सन ने अपने LSI (Vol. XI, Part I) के अंतर्गत 14 बुंदेलखंडी बोलियों को उल्लेख किया है'', जो बुंदेली से निकट हैं। ये बोलियाँ निम्नलिखित हैं – मानक बुंदेलखंडी, खटोला, लोधानी पवारी, बनाफरी, कुन्द्री, निभट्टा, भदौरी और तोवारगढ़ि, लोधी, छिंदवाड़ा, बुंदेलखंडी, नागपुरी हिन्दी, कोस्ती, कुंभारी।

बुंदेलखंडी क्रिया : संरचनात्मक स्वरूप

बुंदेलखंडी क्रियाएँ भी हिन्दी क्रियाओं की भांति ही व्यवहार करती हैं। बुंदेलखंडी क्रियाओं में 'ना' प्रत्यय की जगह 'बौ/वो' प्रत्यय का प्रयोग होता है। जिन शब्दों से किसी कर्म के होने या करने या किसी प्रक्रिया में होने का बोध हो उन शब्दों को क्रिया कहते हैं। क्रिया वाक्य का एक बहुत ही महत्वपूर्ण अंग है। क्रिया के बिना वाक्य की संरचना संभव नहीं मानी जाती। क्रिया किसी भी प्रकार के वाक्य को गति प्रदान करने की क्षमता रखती हैं। क्रिया के माध्यम से ही वाक्य के पूर्ण और अपूर्ण होने का पता चलता है।

उदाहरण :– क. राम पुस्तक पढ़त है। ख. राम पुस्तक पढ़ रहौ है। ग. राम ने पुस्तक पढ़ लई है।

उपरुक्त दिये गये तीनों वाक्यों में एक ही क्रिया 'पढ़' (To Read) का प्रयोग हुआ है। किन्तु क्रमशः दिये गये तीनों वाक्यों में कर्म के पूर्ण होने का बोध अलग–अलग हो रहा है। क्रिया का निर्माण धातु (Root) से होता है। दूसरे शब्दों में यदि परिभाषित किया जाए तो क्रिया के मूल स्वरूप को ही हम धातु कह सकते हैं। जैसे – पढ़, लिख, खा, दौड़, खेल, सुन, बैठ आदि ये सभी धातु रूप क्रियाओं के ही मूल रूप हैं। इन्हीं धातु रूप में 'ना' प्रत्यय लगाकर प्रयुक्त किए जाने वाले रूप को क्रिया कहा जाता है।

धातु + ना – क्रिया
हिन्दी – खेल + ना – खेलना
बुंदेलखंडी – खेल + बौ – खेलबौ

बुंदेलखंडी भाषा में भी क्रिया के दो भेद मिलते हैं जो निम्न प्रकार हैं – 'मुख्य क्रिया' और 'सहायक क्रिया'।

बुंदेलखंडी – **1. मुख्य क्रिया** **2. सहायक क्रिया**

1. **मुख्य क्रिया** – क्रिया पदबंध का वह अंश जो कोशीय अर्थ वहन करता है, मुख्य क्रिया कहलाता है जैसे, पढ़, चल, मना कर, भूल जा, आदि।